'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८५ | वाराणसी, शनिवार, २५ जुलाई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

गोरबन (कश्मीर) १४-७-'५९

जिंदगी में समानता होगी, तभी इतमीनान होगा

[तीन अंक बन्द रखने के बाद प्राप्त दो प्रवचनों से आज हम यह अंक निकाल रहे हैं। पता चला है कि कश्मीर की विषम स्थिति के कारण उधर पू० बाबा ने भी १०, १२ दिनों के बाद यही पहला प्रवचन दिया है।—संपादक]

आप लोग शायद जानते हैं कि आठ साल से हमारी पैदल यात्रा चल रही है। हम शहरों में भी जाते हैं और देहातों में भी। लोग हमारा स्वागत भी करते हैं।

मुख्य चीज करुणा, विद्वत्ता और त्याग नहीं

कुछ लोग समझते हैं कि यह बड़ा आलिम है, विद्वान् है, जाननेवाला है। कुछ तो जानता हूँ। अनेक जबानें जानता हूँ। अनेक धर्मग्रन्थ पढ़े हैं। शास्त्रों का भी मुताला किया है। लेकिन ये सारी बड़ी चीजें नहीं हैं। ऐसे पढ़े लोग कम नहीं, काफी हैं। इसे हम बड़ी चीज नहीं मानते। यह ठीक है कि हम कुछ पढ़े हैं, लेकिन वही हमारा मुख्य गुण नहीं है। कुछ लोग समझते हैं कि यह फकीर है, बड़ा त्यागी है, सब छोड़कर निकला है। यह सही बात है। मैंने माँ-बाप, घर-बार, जायदाद वगैरह सब कुछ छोड़ा है। लेकिन इसे भी हम बड़ी चीज नहीं मानते।

हमारी मुख्य चीज, जो हमें घुमा रही है, वह है 'रहम', जिसे हम संस्कृत में 'करुणा' कहते हैं। याने हमसे यह देखा नहीं जाता कि हिन्दुस्तान में इतनी गुरबत है। इसीलिए हम घूम रहे हैं। आज गरीबों और अमीरों में, देहाती और शहरवालों में, पढ़े हुए और अनपढ़ लोगों में इतना फर्क है कि वह हमसे देखा नहीं जाता। हम इसे इतनी अहमियत न देते, अगर गरीबों को खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, रहने को मकान, दवा-दारू और तालीम का इन्तजाम होता। कम से कम इतनी चीजें तो उनको मुहय्या होतीं। फिर भले ही बड़े लोगों को बड़ी जायदाद मिलती या वे बड़ा ऐशो-आराम करते। गरीबों को जरूरी चीजें मिलें तो वे कभी बड़ों का हसद, ईर्ष्या न करेंगे। लेकिन उन्हें जरूरत की चीजें नहीं मिलतीं। इसीलिए हमें इतना दुःख होता है।

मुझे ऐसी जगहें बरदाश्त नहीं

अभी हम लोरेन से आये हैं। इधर गुलमर्ग है तो उधर लोरेन। लोरेन बड़ी खूबसूरत जगह है। बहुत खूबसूरत नजारा, बहुत बड़ी दिलकश जगह है। लेकिन हमने इतनी गुरबत वहाँ देखी कि वह हमें बरदाश्त नहीं हुई। याने ऐसी जगह हम ज्यादा दिन नहीं रह सकते। हम एक बार मसूरी गये थे। बड़े-बड़े लोगों के आलीशान मकानात वहाँ हैं। लेकिन वहाँका सारा दृश्य देखकर हमें बहुत रंज हुआ, दुःख हुआ। ज्यादा दिन हम वहाँ भी ठहर न सके। क्योंकि हमने देखा कि वहाँ गरीबों को खाना-पीना बहुत कम मिलता है। मजदूर बोझ ढोते हैं। लेकिन उनके लिए कोई खास इन्तजाम है ही नहीं।

हमें तो बहुत दया आती है, इन ऐशोआराम करनेवालों पर! यह सारी बड़ी नासमझी है। वे आस-पास के लोगों के दुःख पहचानते ही नहीं। असल में देखा जाय तो बात ऐसी है कि मदद करनेवाले को उससे ज्यादा तसल्ली मिलती है, जो मदद पाता है। यह तजुरबे की बात है। प्यासे को पानी पिलानेवाले को प्यासे से ज्यादा तसल्ली मिलती है, क्योंकि इसमें इन्सानियत है। अल्ला ने इन्सान को सबसे बड़ी जो चीज बक्शी है, वह है इन्सानियत। उसीको हम रहम, हमदर्दी या करुणा कहते हैं। यह चीज जितनी जिस शख्स में होगी, उतना ही उसकी जिंदगी में, अंतःकरण में इतमीनान होगा, सुकून होगा। उतनी ही उसे शान्ति मिलेगी।

इन्सानियत नहीं तो इन्सान ही क्या?

कुरानशरीफ में आया है कि 'तुम रोजा रखो।' खैर, किसी वजह से रोजा नहीं रख सके तो क्या उसके लिए भी कोई उपाय है, इलाज है? हाँ, कुरान शरीफ ही बताता है कि 'रोजा नहीं रख सकते तो गरीबों को खिलाओ।' मानी यह हुआ कि भले मानुस! तू रोजा नहीं रख सकता तो मत रख, लेकिन भूखे की तकलीफ समझ ले, गरीब की तकलीफ समझ ले। जो भूखा है, उसे पहले खिला! यह पहला फर्ज है। जो यह नहीं करता, वह कुछ भी नहीं जानता। उसे धर्म छुआ ही नहीं है। फिर वह चाहे कितनी ही लंबी-चौड़ी किताबें पढ़ता हो, पूजा-इबादत करता हो, लेकिन तंग-दिल है तो उस शख्स में यह सब होने पर भी इन्सानियत नहीं है। उसमें इल्म हो, वह बड़ा आलिम हो,

लेकिन हमदर्दी न हो तो इन्सानियत भी नहीं है। फिर जिस इन्सान में इन्सानियत नहीं है, उसकी शकल-सूरत भले ही इन्सान की हो, लेकिन वह इन्सान नहीं है—ठीक वैसे ही, जैसे नमक में नमकीनपन न हो, खारापन न हो, शक्कर में मिठास न हो तो वह सिर्फ एक पाउडर जैसी चीज होगी, शक्कर या नमक नहीं। इसलिए आदमी में दूसरे और गुण हों या न हों, लेकिन कम-से-कम इन्सानियत तो होनी ही चाहिए।

आज बाजार में प्रेम नदारद

दुःख की बात है कि आज इन्सानियत ही नहीं है। बाजार में यह नहीं मिलती। प्रेम नहीं मिलता। छोटा बच्चा दो पैसे का गुड़ खरीदने के लिए बाजार में जाता है तो दूकानदार मान लेता है कि यह लूटने का अच्छा मौका है, ठग लेने का अच्छा मौका है। बेचारा बच्चा बाजारभाव क्या जाने? इसीलिए दूकानदार को मौका मिलता है। मजा यह कि जब धर्म करने का मौका आयेगा तो दूकानदार वह भी करेगा। बहुत दफा ऐसा होता है कि बाबा को खिलानेवाले दुनिया को चूसनेवाले होते हैं। लेकिन बाबा ऐसा बेवकूफ नहीं है कि जो खिलानेवाला हो, उसे आशीर्वाद दे दे, दुवा दे दे। वह तो पूछेगा कि क्यों, गरीबों को क्या खिलायेगा? फिर बाबा तो कहता ही है कि बाबा का पेट तो तभी भरेगा, जब गरीबों के लिए कुछ मिलेगा। लेकिन देखा गया है कि कुछ लोग इधर धर्म भी करते हैं और उधर दुनिया को कसकर लूटते भी हैं, चूसते भी हैं। आज कितना दगा दिया जा रहा है? हर चीज में मिलावट होती है। कोई चीज ऐसी नहीं, जो खालिस मिल सके। घी, दूध में तो मिलावट होती ही है। दवा तो कम-से-कम खालिस हो, लेकिन वह भी खालिस नहीं मिलती। इतनी बेरहमी चल रही है। दवा बीमार के लिए ही होती है, उसमें भी मिलावट! फिर उसके बुरे असर होते हैं—यह लोग कुछ सोचते ही नहीं। दिल इतना सख्त हो गया है। आज इन्सान इन्सान के लिए नहीं सोचता। कुदरत का यह कोप इन्सान के ऐसे कामों का ही परिणाम है। नहीं तो भगवान इतना खौफ क्यों करता? इन्सान तो उसकी औलाद है। इसलिए साफ है कि यह हमारे पापों का ही परिणाम है।

इसलिए हम पुनः कह रहे हैं कि हमें घुमवानेवाली चीज हमारा इल्म नहीं, न हमारा त्याग है और न हमारा फकीरी बाना ही है। दरअसल हमें घुमवानेवाली चीज रहम है, हमदर्दी है।

लालच : डर और निठुरता की जड़

लोरेन में हमने देखा—जितनी खूबसूरत कुदरत वहाँ है, उतना ही बदसूरत इन्सान है। आज तो इन्सान इन्सान से डरता है। इन्सान इन्सान के लिए हमदर्दी नहीं रखता। यहीं देखिये, इसी डर के लिए तो यहाँ जम्मू और कश्मीर स्टेट में सीमा पर करीब ८० हजार फौज खड़ी की गयी है। उधर पाकिस्तान में भी ऐसी ही फौज खड़ी की गयी होगी, शायद इससे भी ज्यादा। इतना डर छाया हुआ है। इसीके कारण ऐसे हथियार ईजाद किये गये हैं, जैसे जानवरों के लिए भी करने की जरूरत महसूस नहीं हुई थी। शेर के खिलाफ ऐटम बम की जरूरत नहीं पड़ी। लेकिन इन्सान के लिए उससे भी बड़े-बड़े हथियारों की जरूरत मालूम हो रही है और वे रोज नये-नये ईजाद किये जा रहे हैं। आखिर एक दूसरे के लिए इतना डर, इतनी निठुरता क्यों? जवाब है लालच! दूसरे को कुछ न मिले, मुझे सब कुछ मिले—ऐसी भावना! यही इस डर और निठुरता के मूल में है।

जमीन की मालकियत मिटाओ

स्वराज्य आया तो क्या इसपर कुछ इलाज हुआ? कोशिश चल रही है देहात सुधार के लिए। कम्यूनिटी प्रोजेक्ट पर खूब पैसा खर्च हो रहा है। लेकिन दिल्ली के इस विभाग के मुखिया ने हमसे यही कहा कि "हमारी मदद उन्हींको मिल पाती है, जो उसे खींच सकते हैं।" याने जिनमें वह ताकत हैं, उन्हींको मदद मिलती है। जो बिलकुल गरीब हैं, सबसे दुःखी हैं, जिनको सचमुच जरूरत है, उन्हें मदद नहीं मिल रही है। इसीलिए हम घूम रहे हैं। हम चाहते है कि जो सबसे निचला है, दुःखी है, दीन है, उसे मदद पहुँचे। हम यही समझाते हैं कि एक दूसरे पर प्यार करो, हमदर्दी रखो, रहम करो।

इसके लिए हम एक छोटी-सी चीज करने के लिए कहते हैं। वह यह है कि जमीन की मालकियत खतम करो। जमीन की मालकियत खुदा के खिलाफ है। जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी उसने पैदा की है, वैसे ही जमीन भी उसीने पैदा की है और वह सबके लिए पैदा की है। उससे किसीको वंचित रखना खुदा के उसूल के खिलाफ है। इसके लिए झगड़े भी चलते हैं। हमने एक भाई से पूछा था कि उसे कुनबे के लिए कितनी जमीन की जरूरत है? उसने कहा कि उसके कुनबे के लिए उसे चार कनाल की जरूरत है। अब चार कनाल भी कोई चीज है? ४ कनाल याने करीब आधा एकड़। लेकिन एक कुनबे के लिए इतना ही बस है, ऐसा वे लोग कहते हैं। अभी इस स्टेट में १८२ कनाल का सीलिंग हुआ है। मैं सोचने लगा कि यह १८२ का आँकड़ा कहाँसे आया होगा, १८२ आँकड़े से इतना प्यार क्यों हुआ होगा? तो मुझे यह खयाल हुआ कि शायद एक साल के ३६५ दिन होते हैं। उनका आधा याने १८२॥ होता है। याने रोज का आधा कनाल एक कुनबे के लिए। तो, मतलब यह कि सरकार ने इनके लिए रोज का आधा कनाल रखा है। लेकिन ये लोग साल-भर के लिए एक कुनबे के लिए ४ ही कनाल मांगते हैं, रोज का आधा कनाल भी नहीं। उतने में ही गुजारा कर लेंगे। इतनी छोटी-सी मांग भी हम पूरी न कर सकें तो हम समझते हैं कि लानत है हमारी जिंदगी पर!

हमने भगवान का हाथ देखा

खुशी की बात है कि आपसे आज मिलना हुआ है। इस बुढ़ापे में हम पीर-पंजाल का बहुत बड़ा पहाड़ लाँघकर आये हैं। दो मनुष्यों के हाथ पकड़ कर हम चले। उन्हींको ज्यादा तकलीफ हुई होगी, क्योंकि सारा बोझ उन्हींके हाथों पर पड़ता था। हम सिर्फ उनके कंधे पर नहीं बैठे, उतना चलने का काम हमने किया। चलने में जो थोड़ी तकलीफ होती थी, उतनी ही हमने उठायी। लेकिन यह जो पहाड़ हमने लाँघा, इसमें हमने भगवान का हाथ देखा है। इस पहाड़ के उस पार मंडी राजपुरा में हमें ६।७ दिन इस बारिश के और सैलाब के कारण रुकना पड़ा। वहाँ रोज मनुष्य मरते थे, मकान गिरते थे। एक मकान के नीचे ७ लोग मर गये। ८वां जिंदा बाहर निकाला गया, लेकिन दो दिन बाद वह भी मर गया।

हमने तय किया था कि अगर हम यह पहाड़ न लाँघ सके तो ईश्वर का इशारा समझकर वापस लौटेंगे और सीधे पंजाब में चले जायँगे। क्योंकि मैं जो निकला हूँ, वह ऐसे ही नहीं निकला हूँ। मैं हर चीज में परमेश्वर का इशारा देखता हूँ। एक साल से जाहिर हो चुका था कि हम कश्मीर जा रहे हैं। तो, जब परमेश्वर ने देखा कि यह वापस जाने की सोच रहा है तो,

इसकी फजीहत न करें। बस, फिर क्या था? आसमान साफ हो गया था और हम निकल पड़े। पहाड़ पर देखा गया कि दो दिन आसमान बहुत ही साफ रहा, हवा अच्छी रही। एक दिन शाम को तो लोगों ने सोचा था कि बारिश आयेगी, जल्दी खा लें। लेकिन लोगों ने देखा कि आसमान साफ हो गया। बारिश नहीं हुई। जैसी बारिश जोर से इसके पहले हुई थीं, वैसे कल, परसों हो सकती थी और हमारी यात्रा को रोक सकती थी।

मैं एक यकीन रखनेवाला आदमी हूँ। परमात्मा पर मेरा भरोसा है। इसलिए जो हुआ, वह सहज हुआ, ऐसा मैं नहीं मानता। जो हुआ, उसमें भगवान का इशारा है। इसलिए हम जो पहाड़ लांघ सके, उसमें उसका हाथ है। वह कहता है कि तू जा, कश्मीर में जा और अपना काम कर—ऐसा ही मैंने समझ लिया है।

दरअसल यह मेरा काम नहीं। यह तो भगवान का, अल्ला का काम है। नहीं तो मेरी क्या हस्ती है? मेरी कोई हस्ती नहीं और न मुझमें इतनी ताकत है कि आठ साल सतत पदयात्रा करूँ। न मेरे पास दौलत है, न मेरी कोई संस्था है, न पार्टी है, न मेरे कोई खास साथी हैं, न मेरी कोई सल्तनत है, न मेरा सल्तनत पर विश्वास है, यकीन है। मैं अकेला, एक, अनफर्दा हूँ और यह विचार लेकर निकल पड़ा हूँ कि भारत के ५ करोड़ लोगों को जमीन मिलनी चाहिए। इसलिए यह कोई मेरी ताकत नहीं, यह परमात्मा की ताकत है। अपनी ताकत पर मेरा भरोसा नहीं है। परमात्मा की ताकत पर भरोसा रखकर ही मैं निकल पड़ा हूँ और इसी विश्वास से यहाँ आपके पास पहुँचा हूँ।

चढ़ाई और उतराई दोनों में ही खतरा

मैंने कहा है कि लोरेन एक अच्छी जगह बननी चाहिए। गुलमर्ग एक दूसरी तरह की जगह है। वहाँ बड़े-बड़े मकान, होटल हैं, यात्री मौज उड़ाने आते हैं, पैसा देते हैं। मैं चाहता हूँ कि लोरेन एक ऐसी जगह बने, कश्मीर एक ऐसी जगह बने, भारत एक ऐसी जगह बने, दुनिया एक ऐसी जगह बने, जहाँ गुरबत बिलकुल-कतई न हो और ऐशोआराम न हो। दोनों हालतों में मनुष्य तंग होता है, गिरता है। जिंदगी में समानता होगी, तभी इतमीनान होगा। मैं अक्सर मिसाल देता हूँ। चढ़ाई और उतराई—दोनों हालतों में खतरा होता है, इसलिए सावधानी से चलना चाहिए। चढ़ाव में छाती पर बोझ पड़ता है, सांस लेने में कठिनाई होती है। पाँव चढ़ता है, लेकिन थकता है। गुरबत भी एक चढ़ाव है। गुरबत के दुःख में इन्सान का वह हाल होता है, जो चढ़ाव में होता है। और ऐशोआराम उतार है। उसमें भी इन्सान को काफी सम्हालना पड़ता है। ऐशोआराम में हम नीचे न गिरें, इन्सानियत कायम रखें—यह कठिन होता है। इसलिए जहाँ गुरबत भी न हो, ऐशोआराम भी न हो—ऐसी जिंदगी इन्सान बनायेगा, तभी इन्सानियत पनपेगी।

सेवा ही इन्सान का काम

परमेश्वर ने इन्सान बनाया, वह इसलिए कि वह खिदमत करे। इन्सान फल, तरकारी खाता है और पेड़ों की सेवा भी करता है। बंदर तो एक गुना खायेगा, चार गुना फेंकेगा और कभी पेड़ों की सेवा भी नहीं करेगा। पर इन्सान सिर्फ खानेवाला जानवर नहीं। इसलिए इन्सानियत पनपेगी, अगर हम गुरबत को मिटा दें और ऐशोआराम को भी मिटा दें।

ये ही चीजें समझाता हुआ मैं चला हूँ। इस लिए लोरेन एक ऐसी जगह बने—इबादतगाह, योगियों का स्थान बने; भोग का स्थान न बने। उधर गुलमर्ग 'भोग' का स्थान है तो इधर यह लोरेन 'योग' का स्थान बने। ♦♦♦

स्वागत-प्रवचन

सूरनकोट (कश्मीर) २८-६-'५९

गाँव-गाँव लोग अपनी ताकत बनायें

सुबह चलते समय काफी चर्चा होती है, जिससे इल्म बढ़ता है, जो हमारी पहली नमाज है। फिर हम सुबह की तकरीर में प्रेम की बातें करते हैं और शाम की तकरीर में इल्म की, ज्ञान की बातें करते हैं। सुबह की तकरीर दूसरी नमाज हो जाती है। ग्यारह बजे हम कुरानशरीफ पढ़ते और सुनते हैं, जिसमें गाँव के भाई शरीक होते हैं। वह तीसरी नमाज हो जाती है। उसके बाद दोपहर से ३॥ बजे कुछ खास लोग बातचीत करने आते हैं। ऐसे समय पर अक्सर बूढ़े लोग मिलने आते हैं, जो हमारे साथ पैदल चल नहीं सकते। जवानों को हम पैदल-यात्रा में ही समय देते हैं। दोपहर को खास लोगों से मुलाकात याने चौथी नमाज और शाम की सभा याने पाँचवी नमाज हो जाती है।

सिर्फ उपज बढ़ाने से काम न चलेगा

आज रास्ते में बंबई से खास हमसे मिलने के लिए आये एक भाई के साथ चर्चा हो रही थी। उन्होंने पूछा कि अपने मुल्क का यह मकसद कि देश की उपज बढ़े, पर क्या वह भूदान से सधेगा? हमने जवाब दिया कि पैदावार खूब बढ़ाने का काम तो रूस और अमेरिका में भी चला है और हमारी सरकार भी वही करती है। तब हम भी वही कोशिश करें या और कुछ काम करें? हम जरूर चाहते हैं कि पैदावार बढ़े, क्योंकि हमारे मुल्क में पैदावार बहुत कम है। चीन और जापान में हमसे तिगुनी फसल होती है। इसलिए यह ठीक है कि हम नये तरीके सीखें और पैदावार बढ़ायें। लेकिन सिर्फ पैदावार बढ़ने या खाना-पीना खूब मिलने से दिल को तसल्ली नहीं होती। अमेरिका में खाना, पीना, कपड़ा आदि चीजें खूब कसरत से मिलती हैं। वहाँ किसी चीज की किल्लत नहीं है। फिर भी वहाँ बहुत ज्यादा पैदावार होती है तो उसका दिमाग पर खराब असर होता है। अमेरिका में जिस्मानी बीमारियाँ कम हैं, लेकिन दिमागी बीमारियाँ बढ़ी हैं। ऐसे तरह-तरह के पागलपन बढ़े हैं, जिनका डाक्टरों को कोई अंदाजा नहीं था। हमारे यहाँ जिस्मानी बीमारियाँ ज्यादा हैं, क्योंकि खाना कम मिलता है और लोगों को इल्म भी नहीं है कि कैसे खाना चाहिए, क्या खाना चाहिए। किस तरह पकाना चाहिए, यह भी उन्हें मालूम नहीं है। यहाँ ऐसे ढंग से पकाते हैं कि चीज की असली ताकत खत्म हो जाती है। चावल को खूब धो-धोकर पकाते हैं तो अच्छा हिस्सा धोने में ही चला जाता है। नशाखोरी भी बढ़ी है। इन सबकी वजह से यहाँ जिस्मानी बीमारियाँ काफी हैं। लेकिन अमेरिका में दिमागी बीमारियाँ, खुदकशी बढ़ी है। वहाँ होश कम है और जोश ज्यादा है। जरा कुछ दिल के मुआफिक नहीं हुआ तो झट पिस्तौल दबा दिया और खुदकशी कर ली, यही चलता है। वहाँ खाना-कपड़ा खूब है। जितना चाहो, खाओ; जितना पहनना हो, पहनो और जितना

फाडना हो, फाड डालो। यहाँतक होता है कि अनाज के दाम न गिरें, इसलिए वहाँकी खड़ी फसल जला दी जाती है, जो एक किस्म का पागलपन ही माना जायगा। इसलिए समझना चाहिए हम यहाँपर सिर्फ अमेरिका का नमूना बनायें और पाँच साला मंसूबे बाँधें तो तरक्की न होगी। आज तो होता यह है कि इधर आप उपज बढ़ाते हैं और उधर आबादी भी बढ़ाते हैं। फलतः हर साल सौ करोड़ रुपये का अनाज बाहर से मँगवाते भी हैं। इसलिए उपज बढ़ाना जरूरी है। लेकिन सिर्फ उतना काम करने से न तरक्की होगी, न अमन रहेगा और न तसल्ली ही हासिल होगी।

अखलाकी और माली दोनों तरक्कियाँ हों

अखलाकी और माली तरक्की, दोनों साथ-साथ होनी चाहिए। अगर हम बेवकूफ हैं और हमारी थैली खाली है तो उतना खतरा नहीं है। लेकिन हम बेवकूफ हैं और हमारी थैली भरी है तो ज्यादा खतरा है। मुल्क की माली हालत बहुत गिरी है, वह सुधरनी चाहिए, लेकिन अखलाक के साथ। जमीन कानून से छीन ली जाय, जैसा कि कश्मीर में हुआ है तो क्या अखलाक बढ़ता है? लोग बेवकूफ तो होते नहीं, वे कानून बनने से पहले ही अपने भाई-बेटों में जमीन बाँट लेते हैं। उस कानून से कुछ तरक्की तो जरूर हुई है, लेकिन उससे अखलाक नहीं बढ़ा। अखलाकी तरक्की के साथ माली तरक्की हो तभी इन्सानियत बढ़ती है। नहीं तो इन्सान खत्म हो जाता है। भूदान में जमीन प्यार से दी जाती है और प्यार से ही ली जाती है। इसलिए देनेवाले का दिल वसी बनता है, अखलाक बढ़ता है और लेनेवाला भी ठीक से काश्त करता है। दोनों में प्यार बनता है, तो ताकत पैदा होती है। मालिक, मुजारे और बेजमीन—ये तीनों अलग-अलग रहेंगे तो कच्चे धागे जैसे टूट जायँगे। लेकिन तीनों को एक करके बँट दिया जाय तो मजबूत रस्सी बनती है। हम जब एक और नेक बनेंगे, तभी हमारी तरक्की होगी। मुल्क में खुशहाली आयेगी और इन्सान को तसल्ली होगी।

जैसा बोओ, वैसा पाओ

सरकार के पाँचसाला मंसूबे का इरादा अच्छा है, लेकिन वे जो चाहते हैं, वह नहीं हो रहा है। क्योंकि लोगों की तरफ से काम नहीं हो रहा है। अगर ऐसा ही रहा तो सरकार से कुछ नहीं हो सकता। सरकार की बात छोड़ दीजिये, लेकिन अल्लामियाँ, जो अकेला ही हर बात पर कादिर है, हमारी मदद के बिना नाकाम है। वह बारिश बरसाये, लेकिन हम न बोयें तो फसल पैदा नहीं होगी। जहाँ हमारी मदद के बिना अल्लामियाँ भी बेकार है, वहाँ सरकार क्या करेगी; क्योंकि वह तो हर बात पर कादिर नहीं है। यहाँ पानी बहता है, उसका भी फायदा लेने की अक्ल चाहिए। उसे रोकने का इन्तजाम करना चाहिए, तभी फायदा होगा, नहीं तो पानी समुंदर में बह जायगा। उसके साथ मिट्टी भी बह जायगी और यहाँ सिर्फ पहाड़ और पत्थर ही रह जायँगे। इसलिए कुदरत का फायदा उठाने की अक्ल चाहिए। अल्लामियाँ कहता है कि तुम करो तो हम करेंगे। अल्ला तो रहम-दिल है, लेकिन वह कहता है कि 'आम बोओ तो आम पाओ और बबूल बोओ तो बबूल पाओ। हम कहते हैं कि हम बबूल बोयेंगे, फिर भी हमें आम दो। लेकिन अल्ला तो कानून बनाकर बैठा है कि जैसा बोओ, वैसा पाओ।

हम अपनी खराबियाँ दूर करें

मतलब यह है कि हम काम न करेंगे तो सरकार क्या करेगी? इसलिए हमें अपने गाँव के बारे में सोचना होगा, मिल-जुलकर रहना होगा। आज आप एक नहीं होते; कपड़ा, तेल, गुड़ आदि सभी चीजें खरीदते और, नशाखोरी करते हैं तो किस जहन्नुम में जायँगे? इसलिए हमें समझना चाहिए कि हमें अपनी खराबियाँ दूर करनी चाहिए। गाँव की ताकत बनानी चाहिए। ग्यारह साल हुए, हमें आजादी हासिल हुई है। पाँचसाला मंसूबे बन ही रहे हैं। लेकिन हमारी हालत क्या है, यह सभी जानते ही हैं। उधर पाकिस्तान भी हमारे साथ ही आजाद हुआ था, लेकिन वहाँ अमेरिका की फौजी मदद ली जा रही है। हम दोनों एक-दूसरे के डर से फौज पर खर्च कर रहे हैं। इसलिए जरूरी है कि दोनों में प्यार हो। ये सारे मसले हल करने होंगे। ये मसले सरकारों से नहीं, बल्कि आपसे ही हल होंगे।

यह कैसी मालकियत?

इसके लिए जमीन की मालकियत मिटाकर गाँव का एक कुनबा बनाना चाहिए। आप कहते हैं कि आप जमीन के मालिक हैं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि मालिक तो मरते हैं—ऐसे गैरजिम्मेवार ढंग से मरते हैं कि पहले से नोटिस भी नहीं देते। इसलिए समझना चाहिए कि मालिक तो वही एक है। अगर तुम कहोगे कि हम मालिक हैं तो उसके साथ शिरकन करते हो। कुछ लोग कहते हैं कि हम मालिक हैं, क्योंकि हमारे पास कागज पड़े हैं। लेकिन अंग्रेज हिन्दुस्तान के बादशाह बन बैठे थे तो क्या उनके पास कागज नहीं थे? आखिर उन्हें जाना ही पड़ा! इसलिए समझना चाहिए कि हवा, पानी के समान जमीन भी सबकी है। आप मिल-जुलकर काम करेंगे और बाँटकर खायेंगे तो फिर सरकार की तरफ से जो काम होगा, उसका आपको फायदा होगा।

नीचे का सुराख बन्द करो

बचपन में हिसाब पढ़ते समय पूछा जाता था कि एक हौज में ऊपर से, नल से पानी गिरता है और नीचे सुराख से वह बह जाता है तो हौज कब भरेगा? इसी तरह पाँचसाला मंसूबे चल रहे हैं। लेकिन नीचे जो सुराख है, उसे बन्द न किया जाय तो हौज कब भरेगा? सुराख बन्द हो तो फिर ऊपर से कम पानी गिरे तो भी हौज कभी-न-कभी भर ही जायगा। इसलिए गाँव-गाँव के लोगों को अपनी ताकत बनानी चाहिए। ••

अनुक्रम

१. जिन्दगी में समानता होगी, तभी इतमीनान होगा
गोरबन १४ जुलाई '५९ पृष्ठ ५६१
२. गाँव-गाँव के लोग अपनी ताकत बनायें
सूरनकोट २८ जून '५९ ५६३

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी